महादेवी वर्मा के काव्य में राष्ट्रीयता और मानवतावाद

डॉ0 सुधा रानी*

सह आचार्य, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी, हरियाणा, भारत

Email ID: *drsudhachauhan1818@gmail.com*

Accepted: 09.11.2022 **Published**: 01.12.2022

मुख्य शब्दः छायावादी युग, नूतन काव्यधारा, अनुभूति, रहस्यात्मकता, राष्ट्रीयता।

शोध आलेख सार

वास्तव में हम इस बात से सहमत है कि महादेवी वर्मा का काव्य छायावादी नूतन काव्यधारा का संगीत है। इनके काव्य में छायावाद अपने उत्कृष्ट रूप में प्रतिष्ठित हुआ और छायावाद ने ही नई अभिव्यंजना, नई अनुभूति एवं नई भाव भंगिमा प्रदान की है। महादेवी छायावाद की अन्यतम कवयित्री है और उन्होंने छायावादी युग बोध, छायावादी अनुभूति, छायावादी रहस्यात्मकता, छायावादी अभिव्यंजना आदि को पूर्णतया आत्मसात करके ही अपने सुमधुर गीतों की रचना की है। प्रस्तुत शोध पत्र में महादेवी वर्मा के काव्य में राष्ट्रीयता और मानवतावाद के बारे में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

भूमिकाः–

महादेवी वर्मा का काव्य विरह प्रधान है और उनकी एक ही शिक्षा है–'पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति'। महादेवी के काव्य में सुधारवादी, उपदेशात्मकता के स्थान पर मानवता एवं प्रेम का समर्थन दृढ़ता के साथ हुआ है, श्रृंगार के स्थूल एवं मांसल चित्रण के स्थान पर श्रृंगार के अतीन्द्रिय एवं मानसिक पक्ष की प्रबलता मिलती है, साम्प्रदायिकता के स्थान पर विश्वबन्धुत्व का उद्घोष सुनाई देता है, रूढ़िवादिता के स्थान पर सर्वात्मकता आदि की भावनाएँ सर्वाधिक मात्रा में प्राप्त होती हैं। इनका काव्य मूलतः मानवीय एवं सांस्कृतिक धरातल पर स्थित है। उन्होंने मानव–जीवन–सौन्दर्य तथा प्रकृति को आत्मा का अभिन्न सेचतन रूप मानकर एक चेतना को सर्वत्र विलास करते हुए अंकित किया है।

महादेवी की कविता गीतिकाव्य की समस्त विशिष्टताओं से सम्पन्न है। उनकी गीतियों के कई संकलन निकल चुके हैं– 'निहर' (1930), 'रश्मि'(1952), 'नीरजा' (1935), 'सान्धय गीत'

(1936), 'दीप शिखा' (1942) और 'सन्धिनी' (1965) के नाम से प्रकाशित हुए हैं।

महादेवी वर्मा का गीतिकाव्य सर्वोत्कृष्ट है। वे आज भी गीतिकाव्य के क्षेत्र में मूर्धन्य स्थान पर स्थित हैं। इनके गीतों में सहज स्वाभाविकता, वैयक्तिक साधना की प्रबलता मिलती है। महादेवी के गीतों में अनुभूति की भावना तथा कल्पना की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है। इनके गीतों में प्रकृति–सुन्दरी की सचेतन झाँकियाँ अंकित हुई हैं, माननीय कोमल भावनाओं की सुमधुर अभिव्यंजना हुई है, विरह की मूक वेदना, प्रेम की मूक पीड़ा, अत्यन्त मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है।

महादेवी की गीतियाँ अपनी स्वाभाविकता, सरलता, रोचकता, रागात्मकता एवं प्रतीकात्मकता में अद्वितीय हैं।

छायावादी युग में ब्रिटिश शासन का चक्र पराधीन भारत को बुरी तरह रौंद रहा था, स्वतंत्रता के आंदोलन असफल हो रहे थे, नेताओं के अथम प्रयासों से भी परतंत्रता की बेड़ियाँ कट नहीं रहीं थी और चारों तरफ असफलता, पराजय, निराशा आदि का साम्राज्य छाया हुआ था। ऐसी स्थिति में एक कोमल निराश नारी हृदय करूणा के अतिरिक्त और किस मनोभाव को ग्रहण कर सकता था? फिर भी महादेवी वर्मा ने साहित्य और संस्कृति का भी गहन अध्ययन किया था और वे 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की उदात्त भावना से ओतप्रोत थीं। यही कारण है कि उनकी विरहानुभूति में करूणा का साम्राज्य है और इसीलिए उनकी यह धारणा बन गई कि विरह कमल का जन्म वेदना से हुआ है तथा करूणा में ही वह निवास करता है। उनका मन तो पूर्णतया करूणा–सरिता में अवगाहन कर चुका है। बौद्ध धर्म ने उन्हें 'नीर भरी दुःख की बदली''1 बना दिया है और साधना क्षेत्र में उनके लिए पीड़ा के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं –

'तुम को पीड़ा में ढूढ़ा'

तुम में ढुँढूगी पीड़ा।''2

वे कुछ और भी कहती हैं–

''मेरे हँसते अधर नहीं, जग की आँसू की लड़ियाँ देखो,

मेरे गीले पलक छुओं मत मुर्झाई कलियाँ देखो।''3

फिर भी उन्हें यह दशा अत्यधिक प्रिय है–

''मेरे छोटे जीवन में,
देना न तृष्ति कण भर,
रहने दो प्यासी आँखें,
भरती सरिता के सागर।''4

खद्दर धारिणी महादेवी वर्मा ने अपना और भारत का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए छायावादी शैली में लिखा है–

'' मैं कम्पन हूँ तू करूण राग
मैं आँसू हूँ तू है विषाद
मैं मदिरा हूँ तू उसका खुमार
मै छाया तू उसका आधार,
मेरे भारत, मेरे विशाल
मुझकों रहने दो उदार।
फिर एक बार, बस एक बार।''5

फिर उन्होंने प्रिय से निवेदन किया है–

''मेरे बन्धन आज नहीं, प्रिय,
संसृति की कड़ियाँ देखो।
मेरे गीले पलक छुओ मत,
मुर्झाई कलियाँ देखो।''6

इसके उपरान्त वे झकझोरती हुई कहती है–

''घिर सजग आँखें उनींदी, आज कैसा व्यस्त बाना।

जाग तुझकों दूर जाना।''7

महादेवी वर्मा जी ने अपने गद्य में नारी जीवन का वैषम्य और निरीह वर्ग की निरीहता तथा यंत्रणा का यर्थाथ चित्रण किया है। महादेवी ने 'आत्मपीड़ा' के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों एवं मान्यताओं की कारा में वंदिनी नारी का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। महावदेवी जी का हृदय असीम करूणा से परिपूर्ण है, उनके मानस में दुःख का उदधि उमड़ता रहता है और उनका अंग–प्रत्यंग वेदना की तड़पन से व्यथित रहता है। इसी कारण तो नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण कलियों को नहीं, व्यथित मानवों के प्यासे, सूखे अधरों को देखने की आकांक्षा प्रकट करती है, प्रकृति की चिर यौवन सुषमा को नहीं, अपितु मानवों के जर्जर जीवन को देखने की अभिलाषा व्यक्त करती हैं तथा सुगंधित पवन को नहीं, अपितु दुःख के घूंट पीती हुई अथवा ठण्डी सांसों को देखने की तीव्र लालसा व्यक्त करती है। यही है उनका मानव प्रेम जो इस प्रकार व्यक्त हुआ है–

''कहदे माँ क्या अब देखूँ।
देखूँ खिलती कलियाँ या प्यासे सूखे अधरों को
तेरी चिर यौवन सुषमा या जर्जर जीवन देखू।
देखूँ हिम–हीरक हँसते खिलते नीले कमलों पर,
या मुरझायी पलकों से झरते आँसू–कण देखूँ।
सौरभ पी –पी कर बहता देखूँ यह मन्द समीरण,
दुःख की घूँटे पीती या ठंड़ी सांसों को देखूँ।''8

कवयित्री ने मानव को सृष्टि की सर्वोत्तम कृति माना है–

धरा ले परमाणु उधार,
किया किसने मानव साकार' 9

कवयित्री ने मानव को विश्व में पीड़ित और दुःखी रूप में ही देखा। मानव के क्रन्दन को उन्होंने भलीभांति पहचान लिया है–

'अलि में कण–कण को जान चली।
सबका क्रन्दन पहचान चली।''10

मानव–मानव के बीच जो वैषम्य है, वह भी उनसे छिपा नहीं है। किसी के स्वर्णिम स्वप्न भंग हो जाते हैं और मुस्कराते भी रहते हैं–

''कुछ दृग में हीरक जल भरते,
कुछ चितवन इन्द्र धनुष करते,
टूटे सपनों के मनकों से,
कुछ सूखे अधरों पर झरते।''11

स्वयं नारी होने के कारण कवयित्री भी सामाजिक रूढ़ियों में जकड़ी हुई है। इनके काव्य में एक वंदिनी नारी का ही चीत्कार गुंजित हो रहा है। वह नीर भरी दुः.ख की बदली है तथा–

'परिचय इतना इतिहास यही,
मड़ी कल थी मिट आज चली।''12

नारी जागरण की प्रत्यूष वेला में भारत की नारी अपनी शक्ति को पहचानने लगी। गांधी जी के नेतृत्व में छेड़े गए असहयोग आंदोलन में भाग लेकर नारियों ने अपनी असीम क्षमताओं और समानताओं को पूर्ण रूपेण पहचान लिया है। 'रात के उर में दिवस की चाह का शर हूँ।' प्रस्तुत गीत इसी शक्ति की ओर संकेत है। नारी को वंदिनी बनाने वाली दीवारें आज स्वयं ढहने को तैयार हैं। नारी की व्यथा से समाज स्वयं सिंहर उठा है–

''हो उठी हैं चंचु छूकर,
तीलियाँ भी वेणु सत्वर
वन्दिनी स्पन्दित व्यथा से

सिंहरता जड़ मौन पिंजर।''13

अतः महादेवी वर्मा ने मानव सहानुभूति की भावना से प्रेरित होकर जीवन के क्रन्दन को वाणी दी है। मानव विषमता का भी उन्होंने चित्रण किया है। बौद्ध दर्शन की करूणा प्रभावित महादेवी मानव की पीड़ा को विस्मृत नहीं कर सकीं।

जमींदार ग्रामीणों के 'माई बाप और सरकार' बनकर भगवान बन गए और आज तक लोग इनकी पूजा करते हैं। साहुकारों और जमींदारों ने बेचारे ग्रामीणों को अनपढ़, लालची, आलसी, अंधविश्वासी, काहिल एवं कुत्ता बना दिया है। फूल को अपने अज्ञात मन में प्रतीक मानकर जैसे महादेवी ने सांत्वना दी है :–

''मत व्यथित हो फूल, किसको सुख दिया संसार ने।

स्वार्थमय सबको बनाया है– है यहाँ करतार ने।''14

निर्धन और रंकों को ध्यान में रखकर महादेवी जी ने कहा है–

''वे निर्धन के दीप सी,
बुझती–सी मूक व्यथायें।
प्राणों की चित्रपटी में,
आँकी सी करूण कथायें।''15

सारांशः–निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि करूणा के माध्यम से महादेवी वर्मा ने स्वदेश प्रेम की अभिव्यक्ति की है। 'नीर भरी दुःख की बदली' गीत में तो उन्होंने भारत की ही नहीं वरन् विश्व व्यापी दुःख एवं पीड़ा को सजीवता के साथ अंकित किया है। ''है चिर महान' नामक गीत में भी राष्ट्रीय भावना का स्वर मुखरित हो रहा है। महादेवी ने राष्ट्र की धड़कन को सुना और अपने राष्ट्रीय और मानवतावादी विचारों के माध्यम से उस धड़कन को जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास किया।

संदर्भ–ग्रंथ सूचीः–

1. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 227
2. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 32
3. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 108
4. सन्धिनी, महादेवी वर्मा, पृ. 119
5. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 33
6. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 151
7. सन्धिनी, महादेवी वर्मा, पृ. 63
8. आधुनिक कवि, महादेवी वर्मा, पृ. 35
9. आधुनिक कवि, महादेवी वर्मा, पृ. 97
10. सन्धिनी, महादेवी वर्मा, पृ. 155
11. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 227
12. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 256
13. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 30
14. यामा, महादेवी वर्मा, पृ. 27